कल्पते Внас. 2, 15. М. 6,60. ब्रह्मभूयाय 1,98. 12,102. Внас. 14,26. 18, 53. द्राउस्य व्हि भयात्सर्वे जगद्वोगाय कल्पते M. ७,२२.२३. १६. तदङ्कस्पर्शम-वाप्य कल्पते ध्वं चिताभस्मर्जा विष्रुद्धपे Кимаваз. 5,79. म्रजन्मने उक-ल्पत जन्मभी हः RAGH. 18, 32. VIKR. 42. प्राप्तये कल्प् erlangen Mech. 36. — 4) zu Theil werden, mit dem loc.: यज्ञी देवेष् काल्पताम् VS. 19,45. तेषां श्रीमं ियं कल्पताम् ४६. मियं देवेभ्यः कल्पताम् Air. Ba. 8,9. mit dem dat.: कल्पते कास्मै लोका ऊर्धाश्चावताश्च KHAND. Up. 2,2,3. — 5) zu Etwas werden, Etwas werden, sein; mit dem praed. im dat. P. 2, 3, 13, Vartt. 2. मूत्राय कल्पते यवागुः । उच्चाराय यवात्रम् Sch. तस्य नैर्ऋतरा-ज्ञस्य भाषीये किं न जात्त्यमे warum wirst du nicht seine Gattin? R. 5, 25,7. यदीयते विवेकतीस्तदनसाय कल्पते Paskar. II,76. im nom.: वेदि-र्भूमिरकल्पत AV. 13,1,46. 11,3,21. तेने चाकुप्रे ऋषेया मनष्याः RV. 10, 130, 5.6. वित्रवैव नः । स्रकल्टस्यइस्रातः सर्वा Вылт. 8,69. — 6) geschehen, werden, sein: कत्त्पतामचिश्तो भृतयोर्चिवास: Bulic. P.3,16,12. कित्यप्यते हो: प्रीतिः Baxṛṛ 16,12. तीपो ४वीव च सीतायाः परश्चेतसि करूप्स्यति १,४६. यद्यकरूप्स्यद्भिप्रायो योड् रत्नःपतेः स्वयम् ४४. — ७) für richtig, für gültig erklären, sich für Etwas entscheiden; mit dem acc.: एवमुङ्गीवी साममस्रं संधिकारं (wohl Glosse; vgl. विग्रक्मस्रं विज्ञापया-मास 152,5) क्रास्त्रान् Pankat. 150,24. — 8) zurechtmachen, zurüsten: चकुपे (perf. pass., Sch. = सङ्गीकृतम्) चाश्चकुञ्जरम् Вылт. 14,89. — 9) hervorbringen, schaffen, bereiten; mit dem acc.: प्रजापतीना स पतिश्चकपे कान्प्रजापतीन् Вилс. Р. 3,7,25. कल्सा प्रीतिं पराम् Вилтт. 9,45. नाक-ल्प्स्यत्संनिधिं स्वाण्: 21,11. — 10) तानि कल्पेब्रह्मचार् । सेल्लिस्य पृष्ठे तेया ऽतिष्ठत्तप्यमानः समुद्रे Av. 11,5,26. Dem Zusammenhange nach ein part. praes. im nom. in der Bed. des caus.; wahrscheinlich ist aber der Text fehlerhaft.

partic. कुर्ते in Ordnung befindlich, fertig, richtig, vollkommen; hergestellt, zugerüstet: एवमिव कि मिय्ने कुप्तम् ÇAT. Ba. 2, 5, 2, 17. यज्ञ: 48. Air. Ba. 6, 4. वेदि: Çar. Ba. 1,2,5,26. स एव क्रुप्तैः प्राणिर्मेर्येनिर्धि जायेत 11,1,2,3. यागतेमः 13,1,4,3. कूप्ताः कृतिष् लेकिषु स्याम Çâñxu. Ça. 10, 18,2. परेत ऊर्धाः कुप्ता स्तामा भवति कुप्ता एव मेवर्ग लोकं पंति TS.7, 4,3,6. न्यायजूत Âçv. Ça. 12,6. अंजूत unvollkommen, ungültig TS. 3,4, 🕏, з. 7,4,3,6. — वलेन मक्ता वृतः। कृप्तेन चत्रङ्गेण мвн. 3,790. कृप्ताः स्यूणा: 14,282. कृप्तमेव तु तत्रासीतस्त्रानीयम् 13,2766. R. 1,13,15. क्रुप्तके-মনভাষ্য dessen Haupthaare, Nägel und Bart in Ordnung d. i. beschnitten sind M. 4,35. 6,52. Suga. 1,370,16. 2,55,14. vorhanden, da seiend: प्रतिक्रिया यस्य न चेक् कृप्ता Bulle. P. 6, 10, 32. festgesetzt, vorgeschrieben: तासा क्रमेण सर्वासा निष्कृत्ययं मरुर्षिभि:। पञ्च क्रुप्ता मरुायज्ञाः प्र-त्यक् गृक्मिधिनाम् ॥ M. 3,69. 11,27. hervorgebracht, bereitet, gemacht: तत्कव्यां चातलं कृप्तमुक्तभ्यां वितलं विभा: Basc. P. 2,3,40. कृप्तं न ताव-त्पालमेव प्रायी: Çîk. 137, v. l. क्राप्ताधिष्ठ्य aufgestellt 83. क्राप्तापचार Kumaras. 7,88. Vid. 310. जुप्तच्ह्य Megh. 68. जुप्ताङ्गाग Prab. 49,1.

caus. कर्ल्पंपति (Duārup. 33,74) und ेते; स्रचीक्पत्, चाक्रपत् (Av. 6, 35,3), चाक्रपुत् (9,10,19); चीक्रपाति (Rv. 10,157,2); चाक्रपे. 1) in Ordnung bringen, richtig stellen, anordnen, vertheilen: तो संध्रात्म सृत्ने न्वेत्त्वपाति Rv. 10,2,3. स्र्विचिंद्वान्य् तं ने: कल्पपाति 52,4. Av. 4,23, 2. 9,5,13. पूवा धीत्रार्ष्ण कल्पपेपाम् Rv. 10,18,5. तथी लोकाँ। धेकल्प-पन् 90,14. 190,3. गात्रीणि ते ब्रह्मणा कल्पपामि Av. 18,4,32. स्रक्रित्प-

ययाः प्रदिशञ्चतेस्रः 12,1,55. 18,4,7. सिनीवाल्यंचीजुपत् । स्त्रेषुयमन्यत्र दधत्प्मांसम् दधदिक् AV. 6,11,3. Air. Br. 1,9.29. in Ordnung halten: स देवान्यतत्म उ कल्पपादिश: AV.3,4,6. दएउं स दाप्यो दिशतं वृद्धाे का-ना च कित्पतम् beim Steigen und Sinken in das richtige Verhültniss gebracht Jagn. 2,244. प्रयमकात्पत in erster Reihe, - obenan stehend: तमार्मं विज्ञानीयात्पुत्रं प्रथमकात्त्पितम् M. १, १६६. विधिः प्रथमकात्त्पितः MBH. 13,4226. 14,57. - 2) in eine entsprechende Verbindung bringen mit (instr.), Jmd (acc.) Etwas (instr.) zutheilen: येनिदेवाँ मृत्भिः कल्प-याति RV. 10,2,4. भागधेर्येनैवैनीन्यवायवं केल्ययति TS. 2,2,11,3. — 3) zubereiten, zurechtmachen, zurüsten: विज्ञुयानि कल्पपत RV. 10,184, 1. यदीवसवान्कल्पपिति सरोक्विधीनान्येव तत्केल्पपित AV. 9,6,7. यो कुल्पर्यत्ति वकुता वधूर्मिव 10,1,1. प्राः क्षेत्ययैनम् 9,5,4. पर्यः 11,1,36. 10,2,15. श्रीमम् Çат. Вв. 1,3,3,12. श्राकुतिम् ७,3,4. 13,8,3,5. न कल्ट्यले मिमधः किं नु तात МВн. 3, 10049. र्यो वै कल्प्यताम् 16497. नात्रः सुचि-त्राः कल्प्यताम् R. 1,9,5. नव नागसक्स्राणि कल्पितानि यथाविधि 2,83, 3. कल्प्यते मत्तमातङ्गाः 6,9,23. कल्पित gerüstet (von einem Elephanten) H. 1221. नाराजके जनपदे माल्यमार्कद्तिणाः । देवताभ्यर्चनार्याप कल्प्यते नियतैर्जनैः ॥ R.2,67,23. वस्तिस्त् कल्पितः सम्यक् Soça.2,221, 1. म्राह्मां कल्पयामास राज्ञ: Vid. 45. — 4) Jmd (acc.) zu Etwas (dat. oder loc.) verhelfen, eines Zustandes theilhaftig machen: स चानत्याप कल्प्यते Сувтасу. Up. 5,9. (सगरः) प्त्रत्वे कल्प्यामास समुद्रम् мвн. 3, 9912. या लाम् — पुत्रले कल्पिय्यात 17144. Statt des loc. wohl fälschlich der acc. 17142. — 5) für geeignet halten: क्विराज्यं प्रोडाशाः क्शा यूपाश्च खादिराः । नैतानि यातयामानि कल्प्यते (Gorm. कल्पते) पुनर्धरे ॥ R. 2,61,17. न कि मे जीविते किंचित्सामर्घ्यामक् कल्प्यते । श्रपश्यत्याः प्रियं प्त्रम् 43, 19. — 6) anweisen, bestimmen, festsetzen: म्रासनं कल्पपा-मास MBs. 1,58. वत्सं कल्पय मे वीर येनाकुं वत्सला तव । धोद्ध्ये द्वीरम-यान्कामान् Bakg. P. 4,18,9. न्यग्रोधमेव वासार्थे कल्पयामासत्स्तदा R. 2, 52,100. मुखबाह्र रूपड्डाना प्यक्कमारायकल्पयत् M. 1,87.88. 5,127. रा-जकर्मस् युक्तानां स्त्रीणां प्रेज्यजनस्य च। प्रत्यकं कल्पयेद्वत्तिं स्थानकर्मानुद्र-पतः ॥ ७, १२५. ११,२३. न्या राष्ट्रे कल्पयेत्सततं करान् ७, १२८. यस्माद्वागा-यिना भागानाकल्पयत में सुरा: R. 1,66,10. Ragn. 1,94. दिनेध्य: पृथिवी-मिमाम् । वाजिमेधे मक्षयत्ञे विधिवत्कल्पिययित мвн. 3,13107. М. 9,17. कल्पितपत्तमागं शिलाधिपत्यम् Kumaras. 1, 17. Beag. P. 5, 18, 33. — 7) Jmd oder Etwas zu Etwas bestimmen, in Gedanken oder mit Worten zu Etwas machen, für Etwas ansehen, — erklären; mit zwei acc.: ਨਮ੍-त्सृष्टं जले गर्भम् — राधायाः कल्पयामास प्त्रम् MBn. 1,2775.8354. यतश्च भयमाशङ्केत्प्राचीं तां कत्त्पयेदिशम् M. ७, १८०. शिरः — म्रजो ग्रहमचीकृपत् Выла. Р. 8,9,26. श्रीदत्ती अपि स तत्कालं राजा मित्रीरकल्प्यत Катиль. 10,23. मातरं कल्पपत्वेनाम् Kumiras. 6,80. Buig. P. 5,15,1. प्राणस्यान-मिदं सबै प्रजापतिर्कालपयत् M. ५,२८. उभयं देवाः सममन्नमकलपयन् ४,२२४. कुलपालिकाविवार्हे मासाविधिकमकल्पयत् er bestimmte, dass die Hochzeit nach einem Monate stattfinden sollte Dagak. in Benf. Chr. 189, 1. म्रसिना तीद्गणधारेण विख्चालितवर्चमा। प्रगकृतिन वै शत्रं विश्वणं वा न कालपय 11 sehe ich selbst Indra für keinen Feind an R. 2,23,33. — 8) machen, aussühren, veranstalten, bilden, versassen: स्रन्येन मृत्प्रमृद्धः क-ल्पयस्व RV. 10, 10, 12. यथावशं तन्वं कल्पयस्व 15, 14. AV. 7, 104, 1. मुविता केल्पयावहै !kv.10,86,21. एकं सप्तें बद्धधा केल्पयित (रहा. Çरा-